स्वर्ण जयंती वर्ष के अन्तर्गत आयोजित

स्व. महंत राजा दिग्विजय दास स्मृति व्याख्यान माला

संस्कृत-विभाग द्वारा प्रस्तुत
व्याख्यान सार संक्षेप

सत्र - 2007-08

प्राचार्य
(प्रो. ए.के. परसाई)
शास. दिग्विजय महाविद्यालय,
राजनांदगांव (छ.ग.)

विभागाध्यक्ष
(डॉ. (श्रीमती) सुमन सिंह बघेल)
प्राध्यापक - संस्कृत
शास. दिग्विजय महाविद्यालय,
राजनांदगांव (छ.ग.)

शास. दिग्विजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
राजनांदगांव (छ.ग.)

संस्कृत विभाग द्वारा विद्यार्थियों के लिये शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है । ये आयोजन संस्कृत परिषद के द्वारा विभाग के प्राध्यापकों के मार्गदर्शन में सम्पन्न किये जाते है ।

स्नातकोत्तर संस्कृत परिषद (2007-2008) का गठन पिछली उत्तीर्ण परीक्षा में सर्वाधिक अंक के आधार पर किया गया ।

पदाधिकारी व कार्यकारी सदस्य इस प्रकार हैं -

अध्यक्ष	-	देवेन्द्र कुमार, III सेमेस्टर
उपाध्यक्ष	-	कु. पूजा देवांगन, I सेमेस्टर
सचिव	-	टिकेश्वर जायसवाल, III सेमेस्टर
सह सचिव	-	कु. अवन्तिका श्रीवास्तव, I सेमेस्टर

कार्यकारी सदस्य -

1.	कु. सम्पूर्णा शर्मा	-	III सेमेस्टर
2.	कु. पूर्णिमा साहू	-	III सेमेस्टर
3.	कु. संतोष शर्मा	-	III सेमेस्टर
4.	तामेश्वर गायकवाड़	-	I सेमेस्टर
5.	मनोज कुमार	-	I सेमेस्टर
6.	कु. बरखा साहू	-	I सेमेस्टर
7.	कु. प्रियंका ठाकुर	-	I सेमेस्टर
8.	कु. शिल्पा गुप्ता	-	I सेमेस्टर

परिषद के माध्यम से विभाग में विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया गया । छात्रों द्वारा प्रत्येक शनिवार को क्लॉसरूम सेमीनार व संगोष्ठियाँ की गयी, ताकि वे संस्कृत भाषा के महत्व को समझें व वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता को समझें ।

स्नातकोत्तर संस्कृत परिषद द्वारा स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में स्व. महंत राजा दिग्विजय दास व्याख्यान माला का आयोजन किया गया ।

संस्कृत विभाग द्वारा स्नातकोत्तर परिषद का उद्घाटन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि डॉ.(श्रीमती) सुषमा तिवारी विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग, शासकीय कमला देवी महिला महाविद्यालय एवं अध्यक्ष डॉ. आर.एन.सिंह प्राचार्य दिग्विजय महाविद्यालय थे।

इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. आर.एन.सिंह ने संस्कृत भाषा के महत्व को बताते हुए कहा कि संस्कृत एक समृद्ध एवं वैज्ञानिक भाषा है और व्यक्तित्व विकास में इसका योगदान है। भौतिक जीवन की आपाधापी में यदि संस्कृत श्लोकों का पाठ किया जाये तो बहुत आध्यात्मिक शांति की प्राप्ति होती है।

विभागाध्यक्ष डॉ. (श्रीमती) सुमन सिंह बघेल ने परिषद के गठन का उद्देश्य और कार्यों पर प्रकाश डालते हुये कहा कि पदाधिकारी परिषद के माध्यम से सेमीनार, व्याख्यान कार्यशाला आदि विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करें तथा शैक्षणिक गतिविधियों के अतिरिक्त महाविद्यालय के विकास की अन्य गतिविधियों में भी सक्रिय भागीदारी का निर्वध्न करें। यह उनके चहुंमुखी विकास के लिये आवश्यक है।

इस अवसर पर डॉ. श्रीमत सुषमा तिवारी ने आचार्य महिमभट्ट विरचित व्यक्तिविवेक नामक ग्रंथ का परिचय प्रस्तुत किया। साथ ही शब्द और अर्थ से भिन्न व्यंजनावृत्ति विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन तृतीय सेमेस्टर के छात्र टिकेश्वर जायसवाल के द्वारा तथा आभार प्रदर्शन देवेन्द्र साहू के द्वारा किया गया।

विभाग के विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न विषयों पर आलेख प्रस्तुत किये गये एवं सामूहिक चर्चा भी की गयी। गुप्त काल भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग था ? विषय पर छात्रों ने कहा कि गुप्त शासकों ने भारत को राजनीतिक एकता, सुरक्षा व शांति की भावना प्रदान की। गुप्त काल शांति तथा समृद्धि, नगर संस्कृति तथा परिमार्जन, धार्मिक पुनरूत्थान तथा बौद्धिक प्रयास उत्कृष्ट साहित्य तथा कला की उन्नति का युग था।

इसी प्रकार आचार्य कौटिल्य और इनका अर्थशास्त्र विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया आचार्य कौटिल्य के अनुसार - मनुष्यों की जीविका को अर्थ कहते है तथा मनुष्यों से

युक्त भूमि को भी अथ कहते है और इस प्रकार की भूमि को प्राप्त करने तथा उसकी रक्षा करने वाले उपायों का निरूपण करने वाले शास्त्र को अर्थशास्त्र कहते है।

व्याख्यान की इसी कड़ी में " विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः " विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। भरतभुनि के इस सूत्र पर आचार्य भट्टलोल्लट के उत्पत्तिवाद पर परिचर्चा की गयी।

महाकवि कालिदास रचित मेघदूतम में प्रकृति चित्रण विषय पर प्रस्तुति देते हुये कहा कि मेघदूत की काव्य कला का मेरूदण्ड प्रकृति है। इसकी काव्य कला में संख्यातीत सरस और सुरम्य प्रकृति चित्र हैं। इसका आरम्भ ही रामागिरि आश्रम के उस प्रदेश से होता है, जहां सीताजी के स्नान से पावन है।

व्याख्यान की इसी श्रृंखला में " साहित्य के सिद्धांत " विषय पर विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो. कामता प्रसाद त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष संस्कृत इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ उपस्थित थे। प्रो. त्रिपाठी ने रस अलंकार, गुण, वक्रोक्ति, ध्वनि औचित्य और रीति सम्प्रदाय पर प्रकाश डालते हुए साहित्य के सिद्धांत विषय पर अपना सारगर्भित वक्तत्व दिया। उन्होने कहा कि साहित्य के सिद्धांत को समझना अत्यन्त जटिल है। जिस प्रकार चिकित्सा शास्त्रं को पढ़े बिना कोई पूर्णतः कवि नही बन सकता। कवि समाज का मार्गदर्शक है, वह समाज को एक दिशा प्रदान करता है। कवि की कल्पना अद्‌भुत होती है।

विभागाध्यक्ष डॉ. श्रीमती सुमन सिंह बघेल ने कहा कि काव्य उपयोगी होता है, क्योंकि सत्काव्य के द्वारा सामाजिक को अच्छे चरित्रों के माध्यम से और औचित्य के अनुसार लोक व्यवहार के क्रियाकलापों को बताया जाता है। शास्त्रों की अपेक्षा लोक व्यवहार का ज्ञान आसानी से समझ में आता है। प्राचार्य डॉ. ए.के.परसाई ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि वास्तव में साहित्य ही समाज को सही दिशा प्रदान करता है। उन्होंने स्नातकोत्तर परिषद के सभी सदस्यों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम का संचालन परिषद के सचिव श्री टिकेश्वर जायसवाल के द्वारा तथा तथा आभार प्रदर्शन अध्यक्ष श्री देवेन्द्र कुमार के द्वारा किया गया। `

व्याख्यान माला में विषय विशेषज्ञ प्रो.जे. एस. पाण्डे, विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग, कल्याण महाविद्यालय, भिलाई नगर उपस्थित थे। प्रो. पाण्डे ने वेद और वेदांगों के महत्व पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुये कहा कि पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति वेदों को जाने बिना असंभव है। वेदों के साथ-साथ षड वेदांगों का ज्ञान भी आवश्यक है। षड् वेदांगों में भी यास्काचार्य प्रणीत निरुक्त महत्वपूर्ण है। इसमें शब्दों का निर्वचन किया गया है अर्थात् वैदिक शब्दों के अर्थ जानने की प्रक्रिया कही गयी है। पद के नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात चार भेद हैं। क्रिया के छः रूप जन्म लेना, होना बदलना, घटना और नष्ट होना है।

प्रो. पाण्डे ने निरुक्त का प्रयोजन और शब्द नित्य और अनित्य है, इस विषय पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने संस्कृत और वेद को परमार्थ विद्या के नाम से अभिहित किया। यह हर युग में प्रवाहित हो रही है। यह कभी समाप्त नही होगी। यह 21 सदी में प्रासंगिक है। विभागाध्यक्ष डॉ. (श्रीमती) सुमन सिंह बघेल ने कहा कि वैदिक भाषा में लिखे गये साहित्य को वैदिक भाषा में लिखे गये साहित्य को वैदिक साहित्य कहा गया है। यह चार भागों में विभाजित है - संहिता, ब्राम्हण, आरण्यक तथा उपनिषद। वैदिक साहित्य को जानने एवं तदनुसार कार्यकलाप का संचालन करने के लिए वेदांग ग्रंथों की आवश्यकता होती है। वेद के छः अंग है - शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष और निरुक्त। निरुक्त निघण्टु नामक वैदिक कोश का भाष्य है। प्रभारी प्राचार्य डॉ. आर.एन.सिंह ने राजा दिग्विजय दास व्याख्यान माला के उद्देश्य पर अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होने कहा संस्कृत भाषा में रचित ऋचाओं और श्लोकों के पठन-पाठन से आध्यात्मिक अनुभूति मिलती है।

कार्यक्रम का संचालन परिषद के सचिव टिकेश्वर जायसवाल तथा आभार प्रदर्शन उपाध्यक्ष कु.पूजा देवांगन ने किया।

*****

मुख्य वक्ता डॉ० (श्रीमती) सुषमा त्रिवारी

व्याख्यान सुनते हुये छात्र - छात्रायें

कार्यक्रम का संचालन करते हुये
चतुर्थ सेमेस्टर के छात्र टिकेश्वर जायसवाल

मुख्य वक्ता प्रो॰ कामता प्रसाद त्रिपाठी
का स्वागत करती विभागाध्यक्षा
डॉ॰ (श्रीमती) सुमन सिंह बघेल

मुख्य वक्ता प्रो· जे· एस· पाण्डेय

मुख्य वक्ता प्रो· जे·एम· पाण्डे व्याख्यान देते हुये

नवभारत

स्नातकोत्तर संस्कृत परिषद गठित

राजनांदगांव. शासकीय दिग्विजय महाविद्याल, राजनांदगांव में स्नातकोत्तर संस्कृत परिषद का गठन प्राचार्य डॉ. आरएन सिंह के मार्गदर्शन में विभागाध्यक्ष डॉ. श्रीमती सुमन सिंह बघेल द्वारा किया गया. स्नातोकत्तर संस्कृत परिषद के अध्यक्ष देवेंद्र कुमार एमए तृतीय सेमेस्टर, उपाध्यक्ष कु. पूजा देवांगन, एमए प्रथम सेमेस्टर, सचिव श्री टिकेश्वर प्रसाद एमए तृतीय सेमेस्टर, सह सचिव कु. अवंतिका एमए प्रथम सेमेस्टर, मनोनीत किए गए. कार्यकारिणी सदस्यों में कु. पूर्णिमा साहू, कु. संपूर्णा शर्मा, कु. संतोष शर्मा, एमए तृतीय सेमेस्टर एवं तामेश्वर गायकवाड़, मनोज कुमार, कु. बरखा साहू, मुकेश प्रजापति, कु. प्रियंका ठाकुर, कु. शिल्पा गुप्ता, कु. पुनीता जाग्रे को मनोनीत किया गया.

रायपुर, शुक्रवार 15 फरवरी 2008 15

संस्कृत साहित्य सिद्धांत पर व्याख्यान

राजनांदगांव. शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव के संस्कृत विभाग की स्नातकोत्तर संस्कृत परिषद द्वारा साहित्य के सिद्धांत विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया. इस अवसर पर प्रो. कामता त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, संस्कृत इंदिराकला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़, संस्था के प्राचार्य डॉ. ए.के. परसाई, डॉ. श्रीमती सुमन उपस्थित थीं.

संस्कृत समृद्ध एवं वैज्ञानिक भाषा - सिंह

राजनांदगांव. शासकीय स्वशासी दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव संस्कृत विभाग द्वारा स्नातकोत्तर परिषद का उद्घाटन किया गया. जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. श्रीमती सुषमा तिवारी विभागाध्यक्ष संस्कृत शासकीय कमलादेवी महिला महाविद्यालय एवं अध्यक्ष डॉ. आर.एन. सिंह प्राचार्य दिग्विजय महाविद्यालय थे.

इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने संस्कृत भाषा के महत्व को बताते हुए कहा कि संस्कृत एक समृद्ध एवं वैज्ञानिक भाषा है और व्यक्तित्व विकास में इसका योगदान है और भौतिक जीवन की आपाधापी में यदि संस्कृत श्लोकों का पाठ किया जाये तो बहुत आध्यात्मिक शांति की प्राप्ति होती है. विभागाध्यक्ष डॉ. सुमन सिंह बघेल ने परिषद के गठन का उद्देश्य और कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पदाधिकारी परिषद के माध्यम से सेमीनार, व्याख्यान, कार्यशाला आदि विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करें तथा शैक्षणिक गतिविधियों के अतिरिक्त महाविद्यालय के विकास की अन्य गतिविधियों में भी सक्रिय भागीदारी का निर्वहन करें, यह उनके चहुमुंखी विकास के लिए आवश्यक है.

इस अवसर पर डॉ. श्रीमती सुषमा तिवारी ने आचार्य महिम भट्ट विरचित व्यक्ति विवेक नामक ग्रंथ का परिचय प्रस्तुत किया. साथ ही शब्द और अर्थ से भिन्न व्याख्यान प्रस्तुत किया. कार्यक्रम का संचालन तृतीय सेमेस्टर के छात्र टिकेश्वर जायसवाल के द्वारा तथा आभार प्रदर्शन देवेन्द्र साहू के द्वारा किया गया. इस अवसर पर विभाग की श्रीमती यशस्विनी तिवारी एवं कु. दीप्ति नगदिया एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे.

कवि समाज का मार्गदर्शक-त्रिपाठी

राजनांदगांव। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग की स्नातकोत्तर संस्कृत परिषद द्वारा साहित्य के सिद्धांत विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो.कामता प्रसाद त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, संस्कृत इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ उपस्थित थे। कु.शिल्पी गुप्ता ने सरस्वती वंदना और टिकेश्वर जायसवाल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। प्रोफेसर त्रिपाठी ने रस, अलंकार, गुण वक्रोक्ति, ध्वनि औचित्य और रीति सम्प्रदाय पर प्रकाश डालते हुए साहित्य के सिद्धांत विषय पर अपना सारभर्गित वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि साहित्य के सिद्धांत को समझना अत्यंत जटिल है। जिस प्रकार चिकित्सा शास्त्र को पढ़े बिना कोई डॉक्टर नहीं बन सकता, उसी प्रकार साहित्य शास्त्र को पढ़े बिना कोई पूर्णतः कवि नही बन सकता। कवि समाज का मार्गदर्शक होता है वह समाज को एक दिशा प्रदान करता है।

कवि की कल्पना अद्भुत होती है। विभागाध्यक्ष डॉ.श्रीमती सुमन सिंह बघेल ने कहा कि काव्य उपयोगी होता है, क्योंकि सत्काव्य के द्वारा समाज को अच्छे चरित्रों के माध्यम से और औचित्य के अनुसार लोक व्यवहार के क्रियाकलापों को बताया जाता है। प्राचार्य डॉ.ए.के.परसाई ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि वास्तव में साहित्य ही समाज को सही दिशा प्रदान करता है। कार्यक्रम का संचालन परिषद के सचिव टिकेश्वर जायसवाल ने तथा आभार प्रदर्शन अध्यक्ष देवेन्द्र साहू ने किया। कार्यक्रम में प्रो.श्रीमती यशस्विनी तिवारी, महेश कुमार अलेन्द्र एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

वैदिक शब्दों के अर्थ पर व्याख्यान

दिग्विजय कालेज में हुआ आयोजन

▸▸ हरिभूमि न्यूज (राजनांदगांव)।

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव के संस्कृत विभाग की स्नातकोत्तर परिषद द्वारा यास्क रचित निरुक्त में वैदिक शब्दों के निर्वचन विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो. जेएस पाण्डे, विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग कल्याण महाविद्यालय भिलाई नगर उपस्थित थे। प्रो. जेएस पाण्डे ने वेद और वेदांगो के महत्व पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात धर्म अर्थ काम मोक्ष की प्राप्ति वेदों को जाने बिना असंभव है। वेदों के साथ-साथ षट् वेदांगों का ज्ञान भी आवश्यक है। षट् वेदांगों में भी यास्काचार्य प्रणीत निरुक्त महत्वपूर्ण है। इसमें शब्दों का निर्वचन किया गया है अर्थात वैदिक शब्दों के अर्थ जानने की प्रक्रिया कहीं गई है।

पद के नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात चार भेद है। किया के छह जन्म लेना, होना बदलना, घटना और नष्ट होना है। प्रो. पाण्डे ने निरुक्त का प्रयोजन और शब्द नित्य और अनित्य है इस विषय पर भी प्रकाश डाला। विभागाध्यक्ष डा. श्रीमती सुमन सिंह बघेल ने कहा कि वैदिक भाषा में लिखे गये साहित्य को वैदिक साहित्य कहा गया है। यह चार भागों में विभाजित है। संहिता, ब्राम्हण आरणयक तथा उपनिषद। वैदिक साहित्य को जानने एवं तदनुसार कार्यकलाप का संचालन करने के लिए वेदांग ग्रंथों की आवश्यकता होती है। वेद के छह अंग है। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छंद, ज्योतिष और निरुक्त। निरुक्त निघण्टु नामक वैदिक कोशा का भाष्य है। प्रभारी प्राचार्य डा.आरएन सिंह ने राजा दिग्विजय दास व्याख्यान माला के उद्देश्य पर अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा संस्कृत भाषा में रचित ऋचाओं और श्लोकों के पठन पाठन से आध्यात्मिक अनुभूति मिलती है। कार्यक्रम में डा. एनके वर्मा, प्रो. श्रीमती निर्मला उमरे, श्रीमती यशस्विनी तिवारी, महेश कुमार, अलेन्द्र तथा छात्र-छात्राओं उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन परिषद के सचिव टिकेश्वर जायसवाल तथा आभार प्रदर्शन उपाध्यक्ष कु. पूजा देवांगन ने किया।

दिग्विजय कालेज में संस्कृत विभाग द्वारा व्याख्यान माला

साहित्य के सिद्धांत को समझना जटिल

▸▸ हरिभूमि न्यूज (राजनांदगांव)।

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव के संस्कृत विभाग की स्नातकोतर संस्कृत परिषद् द्वारा साहित्य के सिद्धांत विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो. कामता प्रसाद त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, संस्कृत इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ उपस्थित थे।

प्रोफेसर कामता प्रसाद त्रिपाठी ने रस, अलंकार, गुण वक्रोक्ति, ध्वनि औचित्य और रीति सम्प्रदाय पर प्रकाश डालते हुए साहित्य के सिद्धांत विषय पर अपना सारगर्भित वक्तव्य दिया। साहित्य के सिद्धांत को समझना अत्यंत जटिल है। जिस प्रकार चिकित्सा शास्त्र को पढ़े बिना कोई डाक्टर नहीं बन सकता, उसी प्रकार साहित्य शास्त्र को पढ़े बिना कोई पूर्णतः कवि नहीं बन सकता। कवि समाज का मार्गदर्शक होता है वह समाज को एक दिशा प्रदान करता है। कवि की कल्पना अद्भुत होती है।

विभागाध्यक्ष डॉ. सुमन सिंह बघेल ने कहा कि काव्य उपयोगी होता है, क्योंकि सत्काव्य के द्वारा सामजिक को अच्छे चरित्रों के माध्यम से और औचित्य के अनुसार लोक व्यवहार के क्रिया कलापों को बताया जाता है। शास्त्रों की अपेक्षा लोक व्यवहार का ज्ञान आसानी से समझ में आता है। प्राचार्य डॉ. ए.के. परसाई ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि वास्तव में साहित्य ही समाज को सही दिशा प्रदान करता है।

उन्होंने स्नातकोत्तर परिषद के सभी सदस्यों के उज्जवल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम का संचालन परिषद् के सचिव टिकेश्वर जायसवाल के द्वारा तथा आभार प्रदर्शन अध्यक्ष देवेन्द्र साहू के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में प्रो. यशस्विनी तिवारी तथा महेश कुमार अलेन्द्र एवं छात्राएं उपस्थित थे।